राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019-20
10वीं कक्षा
सामाजिक विज्ञान
मॉडल पेपर 2

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5.

प्रश्न संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	उत्तर की शब्द सीमा
1-10	1	20 शब्द
11-19	2	40 शब्द
20-26	4	100 शब्द
27, 29	6	150 शब्द
28	7	150 शब्द

6. प्रश्न संख्या 30 मानचित्र कार्य से संबंधित है और 5 अंक का है।
7. प्रश्न संख्या 24 व 27 से 29 तक में आंतरिक विकल्प है।

---

1. छठी शताब्दी ई.पू. के किन्हीं दो गणतांत्रिक राज्यों के नाम बताइए। 1

उत्तर :
छठी शताब्दी ई.पू. के दो गणतांत्रिक राज्य निम्नलिखित है-
1. कुशीनारा का मल्ल गणतंत्र।
2. कपिलवस्तु का शाक्य गणतंत्र।

2. लोह एवं रक्त की नीति किस शासक द्वारा लागू की गई? 1

उत्तर :
लोह एवं रक्त की नीति 'बलबन' द्वारा लागू की गई।

3. लोकतंत्र का अर्थ बताइए? 1

उत्तर :
एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती हैं, ये प्रतिनिधि जनता के हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाते हैं तथा जनता की इच्छा तक अपने पद पर रहते हैं।

4. राजस्थान के प्रथम श्रेणी के हवाई अड्डे का नाम लिखिए। 1

उत्तर :
जयपुर में 'सांगानेर एयरपोर्ट' राजस्थान का प्रथम श्रेणी का हवाई अड्डा है।

5. राष्ट्रीय आय को परिभाषित कीजिए। 1

उत्तर :
राष्ट्रीय आय से अभिप्राय एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में अर्जित साधन सेवाओं, मजदूरी, ब्याज, लगान व लाभ का जोड़ होती है।

6. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (एनएनपी) किसे कहते हैं? 1

उत्तर :
कुल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में से मूल्यहास एवं पुरानेपन से होने वाला हास घटा देने से जो शेष बचता है, उसे 'शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद' (NNP) कहते हैं।

7. अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र से आप क्या समझते हैं? 1

उत्तर :

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

वह क्षेत्र जिसके अंतर्गत प्राकृतिक कारकों का प्रयोग किया जाता है, प्राथमिक क्षेत्र कहलाता है। इसमें कृषि संबंधित क्रियाएँ; जैसे– पशुपालन, मछलीपालन, खनन एवं उत्खनन आदि क्रियाएँ आती हैं।

8. मौसमी बेरोजगारी क्या हैं? 1

उत्तर :
यह बेरोजगारी मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र में पाई जाती है। कृषि कार्य में खेतों की जुताई, बुआई, कटाई आदि कार्यों के समय रोजगार प्राप्त होता है, परन्तु शेष समय रोजगार प्राप्त नहीं होता अर्थात् वर्ष के कुछ महीने रोजगार तो मिलता है, परन्तु शेष महीने बेरोजगारी रहती है। इस प्रकार की बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहते हैं।

9. 'मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण हैं' स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :
मुद्रास्फीति लेनदारों को घाटा या नुकसान देती है (दंडित करती है) और देनदारों को लाभ देती है। अतः मुद्रास्फीति अन्यायपूर्ण है।

10. माँग प्रेरित मुद्रास्फीति व लागत प्रेरित मुद्रास्फीति से क्या आशय है? 1

उत्तर :
समग्र माँग में वृद्धि होने के कारण जब मुद्रास्फीति बढ़ती है तो उसे माँग प्रेरित मुद्रास्फीति कहते हैं जबकि लागतों में वृद्धि होने के कारण समग्र पूर्ति में गिरावट हो जाने से जो मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है उसे लागत प्रेरित मुद्रास्फीति कहते हैं।

11. विधानसभा का सदस्य होने के लिए कौन सी योग्यताएँ निश्चित की गई है? 2

उत्तर :
विधानसभा का सदस्य होने के लिए निम्न योग्यताएँ निश्चित की गई हैं–
1. प्रत्याशी भारत का नागरिक हो।
2. विधानसभा के लिए उसकी आयु 25 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए।
3. वह संसद द्वारा निश्चित सभी योग्यताएँ रखता हो।
4. वह किसी न्यायालय द्वारा पागल घोषित न किया गया हो।
5. वह दिवालिया न हो।
6. वह संसद द्वारा बनाए गए किसी कानून के अनुसार विधानसभा के लिए अयोग्य न हो।

12. खड़ीन क्या है? प्रकाश डालिए। 2

उत्तर :
खड़ीन राजस्थान के पश्चिमी जिलों विशेषकर जैसलमेर में मध्यकाल में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा उपयोग में लाई गई जल संरक्षण तथा जल प्रबन्धन की एक तकनीक है। जिसमें लोग खड़ीनों (पहाड़ के ढलान वाले हिस्से में बनाए गए बड़े सीढ़ीनुमा खेतों) में खेती करते हैं। खड़ीनों को चारों तरफ ऊँची पाल बनाकर तैयार किया जाता है। इनकी आकृति आटा गूंथने वाली परात जैसी होती है। इनमें बारिश का पानी इकट्ठा हो जाता है।

13. स्थानान्तरित कृषि क्या है? 2

उत्तर :
स्थानान्तरित कृषि ऊष्ण–कटिबंधीय वनों में रहने वाले आदिवासियों द्वारा की जाती है। ये लोग वनों से पेड़ काटकर और उन्हें जला कर छोटे क्षेत्रों को साफ कर लेते हैं तथा वहाँ पर कृषि कार्य करते हैं। दो–तीन वर्ष के पश्चात् साफ की हुई भूमि की उर्वरता कम हो जाती है। इसलिए इसे छोड़कर निकट की दूसरी भूमि साफ कर ली जाती है। कृषि का बार–बार स्थान बदलने के कारण इस प्रकार की कृषि स्थानान्तरित कृषि कहलाती है।

14. अयस्क किसे कहते हैं? लौह अयस्कों के प्रकार लिखिए। 2

उत्तर :
वह खनिज जो कई अवयवों या तत्वों के मिश्रण तथा संचयन से बना होता है, अयस्क कहलाता हैं। लौह अयस्क के पाँच प्रकार हैं– मैग्नेटाइट, हेमेटाइट, लिमोनाइट, सिडेराइट तथा लेटेराइट।

15. "भारत में लौह इस्पात उद्योग का पूर्ण विकास नहीं हो सका"। इसके कोई दो कारण स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :
भारत में लौह एवं इस्पात के अभूतपूर्व भण्डार है। इस उद्योग के पूर्ण विकसित ना हो पाने के निम्नलिखित कारण हैं–
1. उच्च लागत तथा कुकिंग कोयले की सीमित उपलब्धता।
2. कम श्रमिक उत्पादकता तथा अधिक श्रमिक लागत होना।
3. ऊर्जा की अनियमित पूर्ति तथा अविकसित अवसंरचना।

16. भारत की जनगणना द्वारा जनसंख्या को परिभाषित करने के प्रमुख तीन बिंदु बताइए? 2

उत्तर :
1. **जनसंख्या का आकार, वितरण एवं घनत्व –** पुरुष, महिला एवं बच्चों की कुल संख्या तथा किसी निश्चित स्थान पर कितने व्यक्ति रहते हैं।
2. **जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन –** किसी स्थान पर जनसंख्या में निश्चित समय अवधि में जनसंख्या में वृद्धि तथा उसमें परिवर्तन व उसका कारण।
3. **जनसंख्या की विशेषताएँ एवं गुण –** व्यक्तियों की उम्र, पुरुषों व महिलाओं की संख्या का अनुपात, उनका साक्षरता स्तर, व्यावसायिक संरचना एवं स्वास्थ्य की अवस्था इत्यादि।

17. सड़क परिवहन को किन प्रमुख मार्गों में विभाजित किया गया हैं? 2

उत्तर :
सड़क परिवहन को मुख्यतः निम्न मार्गों के रूप में विभाजित किया गया है–
1. **स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग –** ये महा राजमार्ग देश के चार सबसे बड़े महानगरों– दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता को जोड़ते हैं।
2. **राष्ट्रीय राजमार्ग –** ये महामार्ग राज्यों की राजधानियों, प्रमुख नगरों, महत्त्वपूर्ण पत्तनों तथा रेलवे जंक्शनों को जोड़ते हैं।
3. **राज्य मार्ग –** ये सड़कें राज्यों की प्रमुख सड़कें हैं जो राज्यों की राजधानियों को जिला मुख्यालयों व अन्य महत्त्वपूर्ण शहरों से जोड़ती हैं।
4. **जिला मार्ग –** ये सड़कें जिला मुख्यालयों को जिले के अन्य

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

महत्त्वपूर्ण स्थानों से मिलाती हैं।

5. **सीमांत सड़कें** – ये सड़के सीमावर्ती क्षेत्रों में परिवहन के माध्यम से आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है तथा देश की रक्षा तैयारियों को मजबूती देती है।

18. रैम्प का क्या उपयोग हैं? 2

उत्तर :

यात्रियों के चलने–फिरने को सरल एवं सुविधाजनक बनाने और उनके सामान को आसानी से लाने तथा ले जाने में रैम्प का बहुत महत्व हैं। इसके बनने से विकलांगों तथा वृद्धजनों को भी लाभ हो रहा है। अतः प्रत्येक अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल, हवाई अड्डों पर पहुँचने की सड़कों, रेलवे स्टेशन आदि पर "रैम्प" की सुविधा होनी चाहिए। जिससे ऐसे स्थानों पर "फुट–ब्रिज" के ढह जाने तथा भगदड़ मचने की घटनाओं आदि को कम किया जा सके।

19. ठोस कचरा निस्तारण के दो उपाय बताइएँ। 2

उत्तर :

ठोस कचरा निस्तारण के दो उपाय निम्नलिखित हैं–

1. **कचरे का न्यूनीकरण** – कचरे का न्यूनीकरण कचरा निवारण का एक महत्त्वपूर्ण उपाय हैं। इसमें उत्पादक तथा उपभोक्ता, दोनों को कचरा कम उत्पादित करने के लिये प्रेरित किया जाता है जैसे– पैकिंग कम करना।
2. **कचरे का पुनः प्रयोग** – पुनः प्रयोग विधि में जनता को पुनः उपयोगी सामान क्रय करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है जैसे– प्लास्टिक का सामान।

20. शुंग वंश का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 4

उत्तर :

शुंग वंश का संस्थापक और वास्तविक नायक पुष्यमित्र शुंग था। वह बृहद्रथ के शासन काल में मौर्य सेना का सेनापति था। पुष्यमित्र ने बृहद्रथ की हत्या करके स्वयं राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया। उसके पूर्वज उज्जैन अथवा मौर्यों के अधीन पड़ोसी विदिशा राज्य के राज्यपाल थे। आरंभ में शुंग राज्य की सीमा के अंतर्गत संपूर्ण गांगेय क्षेत्र, उत्तरी भारत के कुछ भाग तथा विदिशा राज्य शामिल थे। लेकिन एक शताब्दी के भीतर यह राज्य मगध तक ही सीमित रह गया। पुराणों में पुष्यमित्र का शासनकाल 36 वर्ष बताया गया है। उसके बाद उसका पुत्र अग्निमित्र उत्तराधिकारी बना। अग्निमित्र के बाद सुज्येष्ठ राजगद्दी पर बैठा जिसके बाद उसका पुत्र वसुमित्र उत्तराधिकारी बना। अगला राजा बज्रमित्र हुआ जिसका उतराधिकारी भागवत था। शुंग वंश का अंतिक शासक देवभूति था। 73 ई.पू. के लगभग शुंग वंश का अंत हो गया।

21. "सिकन्दरी गज" के बारे में लिखिये। 4

उत्तर :

बहलोल लोदी ने 1451 ई. में दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने जौनपुर के महमूद शाह शर्की के दिल्ली पर अधिकार करने के प्रयास को असफल कर दिया। 38 वर्ष शासन करने के बाद 1489 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका दूसरा पुत्र निजामशाह सिकन्दरशाह की उपाधि धारण कर सुल्तान बना। तिरहुत, बिहार एवं बंगाल तक उसने साम्राज्य विस्तार किया। इसका न्याय प्रबंध एवं राजस्व सुधार प्रसिद्ध है। भूमि की नाप और उसके आधार पर भूमिकर नियत करने का कार्य किया। एक गज चलाया जो प्रायः 30 इंच का होता था। यह गज लम्बे समय तक 'सिकन्दरी गज' के नाम से चलता रहा। नवंबर 1517 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र इब्राहिम लोदी आगरा में गद्दी पर बैठा। इब्राहिम लोदी ने यह आदेश दिया की लगान केवल जिंस या उपज के रूप में ही वसूल किया जाए।

22. जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क का योगदान लिखिए। 4

उत्तर :

बिस्मार्क प्रख्यात राष्ट्रवादी और कूटनीतिज्ञ था। वह सेंट पीटर्सबर्ग (रूस) और पेरिस (फ्रांस) में राजदूत बना। 1862 में वह प्रशा का प्रधानमंत्री बना। जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने रक्त और लौह की नीति से निम्न तीन युद्ध किए।

1. **डेनमार्क से युद्ध** – 1864 में प्रशा तथा ऑस्ट्रिया की सहायता से उसने डेनमार्क को पराजित कर शेल्सविंग पर अधिकार कर लिया। हॉल्सटीन ऑस्ट्रिया को मिला।
2. **प्रशा और ऑस्ट्रिया युद्ध** – 1866 में उसने ऑस्ट्रिया–प्रशा का युद्ध किया जिसमें ऑस्ट्रिया पराजित हुआ।
3. **फ्रांस के साथ युद्ध** – बिस्मार्क के प्रयास से जुलाई 1870 में सीडान के युद्ध में फ्रांस बुरी तरह पराजित हुआ। 10 मई 1871 को फ्रैंकफर्ट की संधि द्वारा दक्षिणी राज्य (बाडेन, वुर्टेम्बर्ग, बवेरिया और हेस डार्म्सराड) उत्तरी जर्मन महासंघ में मिल गए। इस प्रकार, जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ।

23. भारत में लोकतंत्र के संचालन के मार्ग की तीन प्रमुख बाधाओं का उल्लेख कीजिए। 4

उत्तर :

भारत में लोकतंत्र के संचालन के मार्ग की बाधाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **आर्थिक असमानता** – आर्थिक असमानता वर्ग–संघर्ष को जन्म देती है अर्थात जो लोग साधन–संपन्न हैं और जो लोग साधन विहीन हैं उनमें परस्पर संघर्ष या टकराव पैदा होता है। यह टकराव घृणा और शत्रुता को जन्म देता है जो लोकतंत्र के लिए हानिकारक है। आर्थिक असमानता से भाईचारे की भावना समाप्त हो जाती है जो लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।
2. **सामाजिक असमानता** – भारतीय समाज में जाति, जन्म, धर्म, लिंग आदि के आधार पर सर्वत्र असमानता का व्यवहार दिखाई पड़ता है जो सफल लोकतंत्र के लिए घातक है। जातिप्रथा के कारण लोग विभिन्न समूहों में बँट जाते हैं और परिणामस्वरूप उनमें मतभेद पैदा हो जाते हैं जो राष्ट्र की एकता को हानि पहुँचाते हैं। देश की आपसी फूट लोकतंत्र के सफल संचालन के मार्ग में बाधाएँ खड़ी करती है। जातिवाद के कारण लोगों में ऊँच–नीच की भावना प्रबल होती है।
3. **साम्प्रदायिकता** – सांप्रदायिकता भारतीय लोकतंत्र के लिए एक गंभीर समस्या है। राजनीतिक दल समय–समय पर भारत में पाई जाने वाली धार्मिक एवं सांप्रदायिक विविधताओं से लाभ उठाने के लिए लोगों को भड़काते रहते हैं। इससे उपजी साम्प्रदायिकता के कारण देश के अन्दर घृणा एवं मतभेद उत्पन्न होते हैं जो देश की एकता एवं सद्भावना को नुकसान पहुँचाते हैं। ऐसी परिस्थितियाँ

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

लोकतंत्र के लिए खतरा बन जाती है।

24. स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिक विकास हेतु भारत में कौन-कौन से कदम उठाये गये? 4

उत्तर :

स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिक विकास हेतु भारत में निम्न कदम उठाये गये-

1. 1950 के दशक में अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों ने भारतीय औद्योगिक विकास को निर्धारित किया।
2. 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों (उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण) ने भारतीय औद्योगिक विकास में विशेष भूमिका निभाई है।
3. स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1990 तक अपनाई गयी औद्योगिक नीतियों में अनेक उद्योगों को सिर्फ सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित कर दिया गया था।
4. उद्योगों की स्थापना हेतु लाइसेंस की अनिवार्यता कर दी गई थी।
5. नीतिगत निर्णयों ने निजी क्षेत्र के विकास को सीमित कर दिया।
6. सन् 1991 को औद्योगिक नीति में औद्योगिक लाईसेंसिंग की लगभग समाप्ति तथा सार्वजनिक क्षेत्र के आरक्षण प्राप्त उद्योगों की संख्या में भारी कमी की गई जिसने निजी क्षेत्र के लिए विकास के नये द्वार खोल दिए।
7. निजीकरण के द्वारा 1991 ई. में अर्थव्यवस्था के उन क्षेत्रों को भी खोल दिया गया, जो अब तक निजी क्षेत्र के लिए वर्जित थे।

अथवा

24. भारत में मानव जीवन की गुणवत्ता कम होने के दो कारण बताइए। 4

उत्तर :

भारत में मानव जीवन की गुणवत्ता कम होने के दो कारण निम्नलिखित है-

1. भारत में साक्षरता की दर कम है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यह 74.04 प्रतिशत थी। अर्थात् आबादी का 1/4 वां व्यक्ति अशिक्षित है। निरक्षरता कम उत्पादकता का एक प्रमुख कारण है और आय का निम्न स्तर भारत के अधिकांश लोगों के जीवन की निम्न गुणवत्ता के लिए उत्तरदायी है।
2. स्वास्थ्य पर जीवन की गुणवत्ता निर्भर करती है। विश्व बैंक के अनुसार सन् 2014 में भारत में जीवन प्रत्याशा केवल 68 वर्ष मापी गई है जो चीन और जापान की तुलना में बहुत कम अतः भारत में स्वास्थ्य का स्तर उच्च न होने के कारण भी जीवन की गुणवत्ता कम है।

25. देशी बैंकर के कोई पाँच कार्य बताइये। 4

उत्तर :

बैंक की भाँति कार्य करने वाले व्यक्तियों या निजी फर्मों को देशी बैंकर कहते हैं। देशी बैंकर्स के पाँच कार्य निम्नलिखित हैं-

1. जनता से जमाएँ स्वीकार करना एवं जमाओं पर उचित ब्याज देना।
2. विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को गिरवी रखकर अपने ग्राहकों को ऋण देना, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है क्योंकि वह सम्पत्ति को गिरवी रखे बिना भी ऋण देता है।
3. ग्राहकों के लिए बैंकर ही नहीं अपितु मित्र एवं सलाहकर भी बनना।
4. कोषों को स्थानान्तरित करना।
5. ऋणी को वित्तीय स्थिति एवं व्यवसाय के संबंध में निजी जानकारी के आधार पर ऋण उपलब्ध कराना।

26. बाजार में उपभोक्ता शोषण के कोई तीन प्रकार लिखिए। 4

उत्तर :

बाजार में उपभोक्ताओं का अनेक प्रकार से शोषण किया जाता है, उनमें से तीन मुख्य तरीके निम्नलिखित हैं-

1. **निम्नस्तरीय, असुरक्षित एवं घटिया सामान बेचना –** कभी-कभी दुकानदार उपभोक्ताओं को निम्नस्तरीय एवं घटिया सामान बेचते हैं जो उपयोग में लाए जाने पर उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य व सुरक्षा के लिए हानिकारक हैं। घटिया एवं निम्नस्तरीय वस्तुएँ बेचने से दुकानदार को अधिक लाभ होता है।
2. **मनमानी एवं ऊँची कीमत वसूलना –** कभी-कभी दुकानदार उपभोक्ता से MRP (Maximum Retail Price) से अधिक दाम वसूल करता है। वे स्थानीय कर, परिवहन लागत या अन्य कोई बहाना बनाकर ऐसा करते हैं।
3. **नकली वस्तुएँ बेचना –** दुकानदार या व्यापारी सही व उचित वस्तुओं के स्थान पर नकली वस्तुएँ बेचकर भी उपभोक्ताओं का शोषण करते हैं।

27. 1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष का वर्णन कीजिये। 6

उत्तर :

1857 ई. में अंग्रेजों को पहली बार भारतीयों के संगठित विरोध का सामना करना पड़ा। यह युद्ध सैनिक असन्तोष व धर्म-युद्ध से प्रारम्भ होकर स्वतन्त्रता संग्राम में जाकर समाप्त हुआ।

1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष के कारण–

1. **राजनीतिक कारण –** अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति, लार्ड वेलेजली की सहायक संधि, लार्ड डलहौजी की लैप्स नीति, अवध का अनैतिक रूप से अंग्रेजी राज्य में विलय, मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर का अपमान।
2. **प्रशासनिक कारण –** ब्रिटिश न्याय प्रणाली, भारतीय को ऊँचे पदों से वंचित रखना, अंग्रेज कर्मचारियों का भारतीयों से दुर्व्यवहार तथा कानून बनाने वाली संस्थाओं में भारतीय को न लिया जाना।
3. **आर्थिक कारण –** भारत का आर्थिक रूप से शोषण, अत्यधिक भू-राजस्व दर, भूमि पर बढ़ता दबाव, इनाम में प्राप्त जागीरों को छीनना तथा लोगों की गरीबी व बेकारी।
4. **सामाजिक व धार्मिक कारण –** सामाजिक सम्मान को ठेस पहुँचाना, भारतीयों से अपमानजनक व्यवहार, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली तथा ईसाई धर्म का प्रचार।
5. **सैनिक कारण –** अवध का विलय, सेना का दोषपूर्ण वितरण, अंग्रेजों की सैनिक विफलताएँ तथा सामान्य सेवा भर्ती नियम।
6. **तात्कालिक कारण –** विद्रोह का तात्कालिक कारण 1857 में नई एनफील्ड राइफल में लगाई जाने वाली कारतूस को माना जाता है।

1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष का प्रसार–

1. मेरठ में सिपाहियों ने 10 मई, 1857 ई. को खुले तौर पर विद्रोह कर दिया। मेरठ में अपने साथियों को मुक्त कराकर वे दिल्ली की ओर चल पड़े। 11 मई, 1857 ई. को दिल्ली पहुँच कर विद्रोहियों ने अगले ही दिन दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

उस समय बहादुरशाह द्वितीय दिल्ली में मौजूद था। सैनिकों ने बहादुरशाह द्वितीय को भारत का सम्राट घोषित कर दिया। क्रान्ति शीघ्र ही लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बरेली, बनारस, बिहार के कुछ भाग, झाँसी और अन्य क्षेत्रों में भी फैल गई।

2. 4 जून, 1857 ई. को लखनऊ में क्रान्ति हो गई, भारतीय सैनिकों ने रेजीडेन्सी को घेर लिया जिसमें ब्रिटिश रेजिडेन्ट हेनरी लारेन्स की मृत्यु हो गई। नवम्बर 1857 ई. में मुख्य सेनापति सर कॉलिन कैम्पबेल ने गोरखा रेजिमेन्ट की सहायता से नगर में प्रवेश किया। मार्च 1858 ई. को नगर पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया।
3. 5 जून, 1857 ई. को क्रान्तिकारियों ने कानुपर पर अधिकार कर नाना साहिब को पेशवा घोषित कर दिया। पेशवा नाना साहिब का साथ तात्या टोपे ने दिया। 6 दिसम्बर, 1857 को सर कैम्पबेल ने कानपुर पर पुनः अधिकार कर लिया। तात्या टोपे भाग निकले और झांसी चले गये।
4. जून 1857 में झांसी में क्रान्ति हो गई। रानी लक्ष्मी बाई को रियासत का शासक घोषित कर दिया। सर ह्यूरोज ने झांसी पर आक्रमण करके अप्रैल 1858 को पुनः उस पर अधिकार कर लिया। 17 जून, 1858 को रानी लक्ष्मी बाई ब्रिटिश सेना से संघर्ष करती हुई वीरगति को प्राप्त हो गई। तात्यां टोपे फिर बच निकले परन्तु अप्रैल 1859 ई. में उन्हें सिन्धिया के एक सामन्त ने पकड़ लिया और अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिया और अंग्रेजों ने उसे फाँसी दे दी।
5. बिहार में इस क्रांति का नेतृत्व जगदीशपुर के जमीदार 80 वर्षीय कुँवर सिंह ने किया। कुँवर सिंह ने अंग्रेज सेनापति मिलमेल, कर्नल डेक्स, मार्क और मेजर डालस को धूल चटाई। अप्रैल 1858 में पुनः अपनी रियासत पर अधिकार कर लिया। 26 अप्रैल 1858 ई. को कुँवर सिंह ने अंग्रेजों से युद्ध किया लेकिन सफलता नहीं मिली।
6. 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में दक्षिणी भारत के प्रमुख नेतृत्व करने वालों में रंग बापू जी गुप्ते (सतारा), सोना जी पण्डित , रंगाराव पागें व मौलवी सैयद अलाउद्दीन (हैदराबाद) भीमराव व मुंडर्गी छोटा सिंह (कर्नाटक), अन्नाजी फड़नवीस (कोल्हापुर), गुलामगौस व सुल्तान बख्श (मद्रास), अरणागिरी व कृष्णा (चिगलफुट), मुलगाबल स्वामी (कोयम्बटूर), मुल्ला सनी विजय कुदारत (केरल), आदि विशेष उल्लेखनीय है।

क्रान्ति का अन्त–

सितम्बर, 1857 में दिल्ली पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया। 1857 ई. का विद्राह कई कारणों से असफल रहा। यह विद्रोह अच्छे साधन एवं धन के अभाव के कारण असफल रहा। आंदोलन को संगठित और कुशल नेतृत्व प्रदान नही किया जा सका। शिक्षित वर्ग इस समय पूरी तरह से उदासीन बना रहा। विद्रोहियों के पास ठोस लक्ष्य एवं स्पष्ट योजना का अभाव था। सैनिक दुर्बलता भी इसकी नाकामी की एक बड़ी वजह बनी।

अथवा

27. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में श्यामजी कृष्ण वर्मा और विनायक दामोदर सावरकर के योगदान को लिखिए। 6

उत्तर :

श्यामजी कृष्ण वर्मा का योगदान–

पश्चिम भारत के काठियावाड़ प्रदेश के निवासी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और बेरिस्टर बन गये। अंग्रेज पोलिटिकल रेजिडेंटो के आचरण से दुःखी होकर उन्होंने भारत को स्वतन्त्र करवाने का दृढ़ निश्चय किया। इन्होंने 1905 ई. में लंदन में इण्डिया हाउस का गठन किया। विदेश आने वाले भारतीयों के लिए इन्होंने एक–एक हजार की 6 फैलोशिप भी प्रारंभ की। जल्द ही "इण्डिया हाउस" लंदन में रहने वाले भारतीयों के लिए आंदोलन का एक केंद्र बन गया। मदनलाल, लाला हरदयाल और वी.डी सावरकर जैसे क्रान्तिकारी इसके सदस्य बन गये। ब्रिटिश सरकार ने श्यामजी कृष्ण वर्मा की गतिविधियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू कर दी जिसके कारण उन्हें इंग्लैण्ड छोड़कर पेरिस जाना पड़ा। वहाँ से उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा।

विनायक दामोदर सावरकर का योगदान–

वीर सावरकर महान देशभक्त और महान क्रान्तिकारी थे। देश की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने आजीवन तप और त्याग किया। उन्होंने 1904 ई. में "अभिनव भारत" की स्थापना की। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक "द इण्डियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस" को ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशन से पहले ही जब्त कर लिया। वह इकलौते ऐसे क्रान्तिकारी थे जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने दो जन्मों की आजीवन कारावास की सजा दी। सावरकर ने 1857 के संघर्ष को गदर न कहकर भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम बताया। इनका लम्बा समय अण्डमान की सेलुलर जेल में बीता। भारत के विभाजन को रोकने के लिए इन्होंने अथक प्रयास किये।

28. राष्ट्रपति की कार्यपालिका संबंधी शक्तियों तथा अधिकारों को समझाइये। 7

उत्तर :

संविधान के अनुच्छेद 53 के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित है और वह अपनी इस शक्ति का प्रयोग अपने अधीनस्थ प्राधिकारियों के माध्यम से करता है। यहाँ अधीनस्थ प्राधिकारी का तात्पर्य केन्द्रीय मंत्रिमण्डल से है। राष्ट्रपति की कार्यपालिका संबंधी शक्तियाँ एवं अधिकार निम्नलिखित हैं–

1. **शासन संचालन संबंधी अधिकार –** राष्ट्रपति को शासन संचालन संबंधी महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त है। भारत सरकार के कार्य के सुचारु संचालन के लिए संविधान नियम बनाने का अधिकार भी राष्ट्रपति को प्राप्त है।
2. **नियुक्ति संबंधी शक्ति –** संविधान द्वारा राष्ट्रपति को यह शक्ति दी गयी है कि वह संघ से संबंधित महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ करें। राष्ट्रपति इस शक्ति के प्रयोग में कई पदाधिकारियों, जैसे– महान्यायवादी, नियन्त्रक महालेखा परीक्षक, वित्त आयोग के सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों, संयुक्त राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों, मुख्य निर्वाचन आयुक्त, अन्य निर्वाचन आयुक्तों, उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राष्ट्रीय महिला आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्षों तथा सदस्यों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राज्यों के राज्यपालों, संघ राज्यक्षेत्रों के उपराज्यपालों या प्रशासकों की नियुक्ति कर सकता है। राष्ट्रपति ये नियुक्तियाँ मंत्रिपरिषद् की सलाह से करता है। वह अपने द्वारा नियुक्त प्राधिकारियों तथा अधिकारियों को पदमुक्त कर सकता है।

3. **राज्यों के शासन पर नियन्त्रण –** भारतीय राष्ट्रपति राज्यों के शासन की भी देखभाल करता है। वह देखता है कि उनका शासन संविधान के अनुसार संचालित हो रहा है या नहीं। यदि किसी राज्य में शासन तन्त्र असफल हो जाये तो राष्ट्रपति वहाँ आपातकाल की घोषणा करके वहाँ का शासन अपने नियन्त्रण में ले सकता है।
4. **वैदेशिक क्षेत्र संबंधी अधिकार –** विदेशों के साथ विभिन्न सन्धियाँ तथा समझौते करना तथा विदेशी राजदूतों के प्रमाण–पत्र स्वीकार करना, उसके अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। वह विदेशों में अपने राजदूत भी भेजता है।
5. **सैनिक क्षेत्र में अधिकार –** संविधान के अनुसार राष्ट्रपति तीनों सेनाओं–जल, थल तथा वायु सेना का प्रधान सेनापति है, लेकिन वह सेना संबंधी अधिकारों का प्रयोग स्वेच्छापूर्वक नहीं कर सकता है।
6. **मंत्रिपरिषद् का गठन –** अनुच्छेद 74 के अनुसार राष्ट्रपति संघ की कार्यपालिका शक्ति के संचालन में सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद् का गठन करता है, जिसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता हैं। सामान्यतः राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त करता है, जो लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता हो। इस प्रकार नियुक्त किये गये प्रधानमंत्री की सलाह पर वह मंत्रिपरिषद् के अन्य सदस्यों की नियुक्ति करता है। साथ ही वह प्रधानमंत्री की सलाह पर मंत्रिपरिषद् के किसी भी सदस्य को बर्खास्त कर सकता है।

अथवा

28. भारतीय संसद के कार्य एवं शक्तियों को समझाइए। 7

उत्तर :

भारतीय संसद को संघीय व्यवस्थापिका भी कहते हैं। इसे निम्नलिखित कार्य एवं शक्तियाँ संविधान द्वारा प्रदान की गई हैं–

1. **विधि निर्माण शक्ति –** संसद की सातवीं अनुसूची के संघ सूची तथा समवर्ती सूची में अन्तर्विष्ट विषयों पर विधि निर्माण का पूर्ण अधिकार है, लेकिन उसे निम्नलिखित स्थितियों में राज्य सूची में शामिल किए गए विषयों पर भी विधि निर्माण का अधिकार है–
   (a) अनुच्छेद 250 के अनुसार जब राष्ट्रीय आपात या राज्य में आपात स्थिति प्रवर्तन में हो।
   (b) अनुच्छेद 252 के अनुसार जब दो या दो से अधिक राज्य के विधानमंडल प्रस्ताव पारित करके संसद से विधि निर्माण का अनुरोध करें।
   (c) अनुच्छेद 249 के अनुसार जब राज्यसभा दो तिहाई बहुमत से प्रस्ताव पारित करके संसद से विधि निर्माण का अनुरोध करे।
2. **वित्तीय शक्ति –** संसद का संघ के वित्त पर पूर्ण अधिकार है। प्राक्कलन समिति तथा लोक लेखा समिति का गठन संसद द्वारा किया जाता है तथा भारत की संचित निधि पर संसद का पूर्ण नियन्त्रण होता है। संसद द्वारा निर्मित विधि के प्रावधानों के अनुसार ही भारत की संचित निधि से धन निकाला जाता है। संसद को आकस्मिक निधि को भी स्थापित करने का अधिकार है। संसद के समक्ष वार्षिक बजट पेश किया जाता है, जिसमें वर्ष के प्राक्कलित प्राप्तियों तथा व्ययों का विवरण होता है। उसके अतिरिक्त संसद को विनियोग विधेयक, अनुपूरक, अतिरिक्त या अधिक अनुदान, लेखानुदान, प्रत्यानुदान तथा अपवादानुदान के सम्बन्ध में पर्याप्त शक्ति है। कराधान प्रस्तावों को प्रवर्तित करने हेतु संसद को वित्त विधेयक पारित करने की शक्ति है।
3. **कार्यपालिका सम्बन्धी शक्ति –** संसद सदस्यों में से ही सत्तापक्ष के सदस्यों से मंत्रिपरिषद् का गठन किया जाता है। संसद सदस्य कई प्रस्तावों के माध्यम से मंत्रिपरिषद् पर नियन्त्रण रखते हैं तथा मंत्रिपरिषद् को संसद (विशेषकर लोकसभा) के प्रति उत्तरदायी बनाए रखते हैं।
4. **राज्यों से सम्बन्धित शक्ति –** संसद राज्यों की सीमाओं तथा नामों में परिवर्तन कर सकती है, नये राज्यों का गठन कर सकती है, राज्यों का विभाजन कर सकती है तथा कई राज्यों को मिलाकर एक राज्य बना सकती है। साथ ही किसी विद्यमान राज्य को किसी विद्यमान राज्य में मिला सकती है।
5. **संविधान संशोधन की शक्ति –** संसद को संविधान में संशोधन करने का अधिकार है, लेकिन संसद का यह अधिकार असीमित नहीं है, क्योंकि संसद संविधान संशोधन द्वारा संविधान के मूल ढाँचे को परिवर्तित नहीं कर सकती।
6. **निर्वाचन सम्बन्धी कार्य –** संसद के निर्वाचित सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेते हैं तथा संसद उपराष्ट्रपति को निर्वाचित करती है।
7. **महाभियोग की शक्ति –** अनुच्छेद 61 के अनुसार संसद को राष्ट्रपति तथा उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को महाभियोग प्रक्रिया के माध्यम से पदमुक्त करने का अधिकार है।

29. विधानपरिषद् के गठन की प्रकिया को समझाइए। 6

उत्तर :

संविधान के अनुच्छेद 169 के अनुसार यदि किसी राज्य की विधानसभा अपने कुल सदस्यों के पूर्ण बहुमत तथा उपस्थित मतदान करने वाले सदस्यों के 2/3 बहुमत से प्रस्ताव पारित करें तो संसद उस राज्य में विधानपरिषद् स्थापित कर सकती है अथवा उसको समाप्त कर सकती है।

1. **सदस्य संख्या –** राज्य में विधानपरिषद् के गठन की व्यवस्था संविधान के अनुच्छेद 171 में की गई है। विधानपरिषद् के सदस्यों की संख्या उसकी विधानसभा के सदस्यों की संख्या के 1/3 से अधिक नहीं हो सकती परन्तु किसी भी दशा में विधान परिषद् के सदस्यों की संख्या 40 से कम नहीं होनी चाहिए। लेकिन जम्मू–कश्मीर (36) अपवाद हैं।
2. **सदस्यों का निर्वाचन व मनोनयन –** विधानपरिषद् के लगभग 5/6 सदस्यों को निर्वाचित किया जाता है तथा शेष लगभग 1/6 सदस्यों को मनोनीत किया जाता है। विधानपरिषद के सदस्यों का निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल संक्रमणीय मत पद्धति के अनुसार अप्रत्यक्ष रूप से होता है।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएेंगे।

(a) **स्थानीय संस्थाओं का निर्वाचक मण्डल –** समस्त सदस्यों को यथाशक्य निकटतम एक–तिहाई उस राज्य की नगरपालिकाओं, जिला परिषदों और अन्य स्थानीय संस्थाओं द्वारा चुना जाता है जैसा की संसद कानून द्वारा निर्धारित करे।

(b) **विधानसभा का निर्वाचक मण्डल –** कुल संख्या के यथाशक्य निकटतम एक–तिहाई सदस्यों का निर्वाचन विधानसभा के सदस्य ऐसे व्यक्तियों में से करते हैं जो विधानसभा के सदस्य न हों।

(c) **स्नातकों का निर्वाचक मण्डल –** यह ऐसे शिक्षित व्यक्तियों का निर्वाचक मण्डल होता है जो उस राज्य में रहते हों, जिन्होंने स्नातक स्तर की परीक्षा पास कर ली हो और जिन्हें यह परीक्षा पास किये तीन वर्ष से अधिक हो चुके हो, यह निर्वाचक मण्डल कुछ सदस्यों के यथाशक्ति निकटतम 1/2 भाग को चुनता है।

(d) **अध्यापकों का निर्वाचक मण्डल –** इसमें वे अध्यापक होते हैं, जो राज्य के अंतर्गत किसी माध्यमिक विद्यालय या इससे उच्च शिक्षण संस्था में 3 वर्ष से पढ़ा रहे हो। यह निर्वाचक मण्डल कुल सदस्यों का यथाशक्त निकटतम 1/12 भाग को चुनता है।

(e) **राज्यपाल द्वारा मनोनीत सदस्य –** उपर्युक्त प्रकार के कुल सदस्य संख्या के लगभग 5/6 सदस्यों को तो निर्वाचित किया जाता है, शेष अर्थात् कुलसंख्या के लगभग 1/6 सदस्य राज्यपाल द्वारा उन व्यक्तियों में से मनोनीत किये जाते हैं, जो साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता और समाज सेवा के क्षेत्रों में विशेष रुचि रखते हों।

इस प्रकार विधानपरिषद् के सदस्यों का निर्वाचन होता है।

3. **सदस्यों की योग्यताएँ –**

(a) भारत की नागरिकता।

(b) कम से कम 30 वर्ष की आयु होना।

(c) संघ या राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर नहीं होना।

(d) वह दिवालिया या पागल न हो।

(e) संसद द्वारा निर्मित किसी विधि के अन्तर्गत निर्धारित योग्यताएँ।

इसके अतिरिक्त निर्वाचन के प्रत्याशी को उस राज्य की विधानसभा के निर्वाचन क्षेत्र का निर्वाचक होना चाहिए तथा नामांकन के प्रत्याशी को उस राज्य का निवासी होना चाहिए जिसकी विधानपरिषद् का वह सदस्य बनना चाहता है।

4. **कार्यकाल –** विधान परिषद के प्रत्येक सदस्य का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है किन्तु प्रति दूसरे वर्ष 1/3 सदस्य अवकाश ग्रहण करते हैं तथा उनके स्थान पर नवीन सदस्य निर्वाचित होते हैं।

5. **पदाधिकारी –** विधानपरिषद् के सदस्य अपने सदस्यों में से सदन के कार्य संचालन के लिए सभापति तथा उपसभापति का चुनाव करते हैं। सभापति तथा उपसभापति तब तक अपने पद पर बने रहते हैं, जब तक वे सदन के सदस्य रहते हैं। इसके पहले भी सभापति उपसभापति को या उपसभापति सभापति को त्यागपत्र देकर पदमुक्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त ये सदन के बहुमत द्वारा पारित प्रस्ताव से हटाए जा सकते हैं, लेकिन हटाने का प्रस्ताव पेश करने से पहले उन्हें 14 दिन पूर्व सूचना दी जानी चाहिए।

अथवा

29. राज्य के राज्यपाल को कैसे नियुक्त किया जाता है और कैसे हटाया जाता है? 6

उत्तर :

राज्यपाल की नियुक्ति–

1. राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित होती है, जिनका प्रयोग वह स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करता है। राज्यपाल केन्द्र और राज्य के बीच एक सुदृढ़ पुल का कार्य करता है।
2. राज्य के संवैधानिक प्रमुख होने के नाते राज्य के हितों और कल्याण का संरक्षण करना राज्यपाल का परम कर्त्तव्य है।
3. राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा पाँच वर्ष के लिए की जाती हैं।
4. संविधान में अनुच्छेद 155 को जोड़ा गया, जिसमें कहा गया है कि राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा उसके हस्ताक्षर तथा मुहर लगे हस्ताक्षर द्वारा की जाती है। जिस प्रकार कनाडा में राज्यपालों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
5. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 153 में यह प्रावधान है कि भारत के प्रत्येक राज्य में एक राज्यपाल होगा, किन्तु 1956 में किए गए संशोधन के अनुसार एक ही व्यक्ति को दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।

राज्यपाल को हटाना–

राज्यपाल का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है। राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल की नियुक्ति पाँच साल के लिए की जाती है। संविधान के अनुच्छेद 156 के अनुसार राष्ट्रपति की सहमति बने रहने तक राज्यपाल अपने पद पर बना रह सकता है। राष्ट्रपति कभी भी राज्यपाल को उसके पद से पदच्युत कर सकता है। राज्यपाल की पदावधि राष्ट्रपति की इच्छा पर निर्भर करती है। राज्यपाल राष्ट्रपति को लिखित में अपना त्याग–पत्र प्रेषित कर अपना पद त्याग सकता है।

30. 1. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को अंकित कीजिए– 5

(a) दांडी

(b) शौलापुर

2. दिए गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को अंकित कीजिए–

(a) दिल्ली

(b) चेन्नई

उत्तर :

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

****

सत्र 2020-21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।